Bases of social stratification

सामाजिक स्तरीकरण के आधार

स्तरीकरण प्रत्येक समाज में पाया जाता है, किन्तु उसके आधार समान नहीं है। फिर भी विद्वानों ने कुछ सामान्य आधारों का उल्लेख किया है। पारसन्स ने व्यक्ति की प्रस्थिति निर्धारित करने वाले छः कारकों का उल्लेख किया है -

(i)

(ii) सोरोकिन तथा वेबर

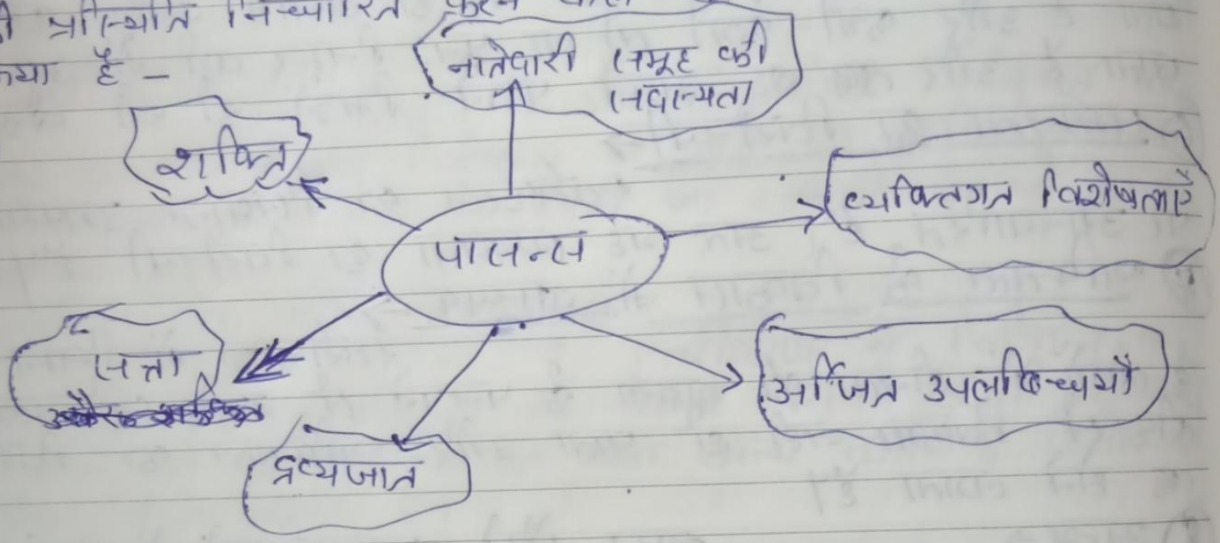

आर्थिक — राजनीतिक — व्यावसायिक

(iii) कार्ल मार्क्स केवल आर्थिक आधार को ही महत्वपूर्ण मानते हैं। जिसमें मुख्यतः दो वर्ग हैं-

पूंजीपति एवं श्रमिक

स्तरीकरण के सभी आधारों को हम प्रमुख रूप से दो भागों में बांट सकते हैं- (i)

(i) प्राणीशास्त्रीय आधार
(ii) सामाजिक-सांस्कृतिक आधार।

⇒ **प्राणीशास्त्रीय आधार** → समाज में व्यक्तियों एवं समूहों की उच्चता एवं निम्नता का निर्धारण प्राणीशास्त्रीय आधारों पर भी किया जाता है। प्रमुख

प्राणिशास्त्रीय आधारों में हम लिंग, आयु, प्रजाति, जन्म एवं शारीरिक व बौद्धिक कुशलता आदि को ले सकते हैं।

① लिंग →

लिंग के आधार पर स्त्री और पुरुषों के रूप में समाज का स्तरीकरण सबसे प्राचीन है। लगभग सभी समाजों में पुरुषों की स्थिति स्त्रियों से ऊंची मानी जाती रही है।

② आयु →

प्रत्येक समाज में कई पद होते हैं जो एक निश्चित आयु के व्यक्तियों को ही प्रदान किये जाते हैं। आयु के आधार पर समाज में प्रमुख चार स्तर – शिशु, किशोर, प्रौढ़ और वृद्ध पाये जाते हैं। सामान्यतः महत्वपूर्ण पद बड़ी आयु के लोगों को प्रदान किये जाते हैं। यह माना जाता है कि आयु और अनुभव का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए उत्तरदायित्व के कार्य अनुभवी एवं वयोवृद्ध व्यक्तियों को सौंपे जाते हैं।

③ प्रजाति →

प्रजाति के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण वहाँ देखा जा सकता है जहां एकाधिक प्रजातियां साथ-साथ रहती हैं। जिस प्रजाति के लोग शासन एवं सत्ता में होते हैं तथा सम्पन्न होते हैं, वह प्रजाति अपने को दूसरी प्रजातियों से श्रेष्ठ मानती है। जैसे – अमरीका में गोरी व काली प्रजाति।

④ जन्म →

जन्म भी सामाजिक स्तरीकरण उत्पन्न करता है। जो लोग उच्च कुल, वंश एवं जाति में जन्म लेते हैं, वे अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानते हैं।

⑤ शारीरिक व बौद्धिक कुशलता →

वर्तमान समय में व्यक्ति की प्रस्थिति एवं स्तर का निर्धारण उनकी शारीरिक एवं मानसिक कुशलता, योग्यता एवं क्षमता के आधार पर होने

लगा है जो लोग अकुशल, पागल, शारीरिक. आलसी एवं अयोग्य होते है, उनका स्तर उन लोगों से नीचा होता है जो बुद्धिमान परिश्रमी, हृष्ट - पुष्ट एवं कुशल होते है

⇒ सामाजिक - सांस्कृतिक आधार :— सामाजिक स्तरीकरण प्राणी-शास्त्रीय आधारों पर ही नहीं वरन अनेक सामाजिक - सांस्कृतिक आधारों पर भी पाया जाता है। उनमे से प्रमुख इस प्रकार है:-

① सम्पत्ति → आधुनिक समाजों में ही नहीं वरन आदिम समाजों में भी सम्पत्ति के आधार पर ऊँच - नीच का भेद पाया जाता है। समाज में वे लोग ऊँचे माने जाते हैं जिनके पास अधिक सम्पत्ति होती है। गरीब तथा सम्पत्तिहीन की स्थिति निम्न होती है। सम्पत्ति के घटने एवं बढ़ने के साथ - साथ समाज में व्यक्ति का स्तर भी घटता - बढ़ता जाता है।

② व्यवसाय → समाज में कुछ व्यवसाएँ सम्मानजनक एवं ऊँचे माने जाते हैं तो कुछ निम्न एवं छोटा। डॉक्टर, इंजीनियर, प्रशासक, प्राध्यापक आदि का पेशा, बाल काटने, कपड़े धोने और चमड़े का काम करने वालों के पेशों से श्रेष्ठ एवं सम्माननीय माना जाता है। अतः इन पेशों को करने वालों की स्थिति भी सामाजिक संस्तरण में ऊँची होती है।

③ धार्मिक ज्ञान → जो लोग धार्मिक कर्मकाण्डों में संलग्न होते हैं, धार्मिक उपदेश देते हैं, एवं धर्म के अध्ययन में रत रहते हैं, उन्हे सामान्य लोगों से ऊँचा माना जाता है।

④ राजनीतिक शक्ति → जिन लोगों के पास सैनिक शक्ति, सत्ता और शासन की बागडोर होती है, उनकी स्थिति उन लोगों से ऊँची होती है जो सत्ता एवं शक्तिविहीन होते है। शासक और शासित का भेद सभी समाजों में पाया जाता है।

JULY

24 SATURDAY

सामाजिक स्तरीकरण के अकार्य

सामाजिक स्तरीकरण ने जहां अनेक लाभ है और जहां यह व्यक्ति एवं समाज के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य करता है, वहीं इसके अनेक दोष या अकार्य भी है जो निम्न है:—

(1) **निष्क्रियता →** स्तरीकरण में अक्सर व्यक्ति निश्चित पद प्राप्त कर लेने के बाद निष्क्रिय हो जाते है। ऐसी निष्क्रियता अधिकांशतः उन लोगों में देखी जा सकती है जो उच्च पद पर पहुंच जाते है।

(2) **वर्ग चेतन और पक्षपात →** स्तरीकरण में विभिन्न वर्ग बन जाते है। इन वर्गों में वर्ग चेतना पनपने लगती है और वे अपने वर्ग के प्रति पक्षपात तथा अन्य वर्गों के हितों की उपेक्षा करने लगते है।

(3) **संघर्ष को जन्म →** स्तरीकरण के कारण समाज में विभिन्न वर्ग पनपते है। इन वर्गों में कुछ को कम और कुछ को अधिक अधिकार एवं सुविधाएं प्राप्त होती है। उच्च वर्ग निम्न वर्ग पर बोझ होता है और उनका शोषण करता है। इससे विभिन्न वर्गों में संघर्ष पनपता है तथा सामाजिक एकता खतरे में पड़ जाती है। विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक दूरी बढ़ती जाती है और उनमें विरोधी भावना पनपती है। ऐसी स्थिति में सामाजिक लाभ भी समाप्त हो जाते है। उच्च वर्ग के लोग धन संग्रह करने में लगे रहते है जबकि निम्न वर्ग के लोगों को उनके परिश्रम का उचित पुरस्कार भी नहीं मिल पाता।

(4) **निराशा का जन्म →** स्तरीकरण में कुछ व्यक्तियों को अधिक महत्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते है और कुछ को कम। जिन लोगों को कम महत्वपूर्ण पद एवं कार्य सौंपे जाते है, उनमें निराशा एवं असन्तोष पैदा होता है।

(5) असुरक्षा → स्तरीकरण में प्रतिस्पर्द्धा पायी जाती है, इसलिये व्यक्ति को सदैव असुरक्षा महसूस होती है कई बार उच्च पद पर पहुंच जाने के बाद भी उस पद को बनाये रखना कठिन होता है और कभी-कभी तो वह पुनः निम्न वर्ग में आ जाता है और तब वह अपने पुराने मित्रों को खो बैठता है

(6) समानता का विरोधी → स्तरीकरण का सिद्धान्त असमानता पर आधारित है अतः यह समानता का विरोधी है

(7) व्यक्तित्व के विकास में बाधक → स्तरीकरण में निम्न वर्ग के लोगों में हीनता की भावना के पनपने से उनके व्यक्तित्व का ठीक से विकास नहीं हो पाता और व्यक्तित्व का विघटन शुरू होने लगता है

(8) अन्य → भारत जैसे बन्द समाजों में जहां स्तरीकरण प्रमुखतः जाति प्रथा पर निर्भर है, स्तरीकरण अनेक बुराइयों को जन्म देता है जाति ने ऊंच-नीच, छुआछूत, हीन भावना, सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध एवं अन्तर्जातीय विवाह पर रोक, आदि बुराइयों को जन्म दिया है

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्तरीकरण के कुछ कार्य और अकार्य दोनों हैं इसके अकार्यों के बावजूद भी यह सभी समाजों में विद्यमान रहा है स्तरीकरण के अभाव में सामाजिक विघटन एवं क्रान्ति होने के अवसर भी पैदा हो जाते हैं स्तरीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को सामान्यतः अपनी योग्यतानुसार पद एवं भूमिका प्राप्त होती है

Notes